योग सत्संग समिति एवं योग फैलोशिप टेम्पल का मिलन, पूरब एवं पश्चिम का मिलन है-

डॉ० जीना बिदेसी श्री तारामाता

श्री परमहंस योगानन्द जी ने 1951 में कैलीफोर्निया के लेक श्राइन आश्रम में तारामाता से कहा था कि मेरी शरीर छोड़ने 30 वर्षों के बाद क्रियायोग पुन: व्यापक रूप में फैलेगा। श्री परमहंस योगानन्द जी की इच्छा के परिणाम स्वरूप उनकी शरीर छोड़ने के 30 वर्षों के भारत में क्रियायोग अनुसंधान संस्थान (योग सत्संग समिति) की स्थापना हुई। इस संस्थान के द्वारा क्रियायोग जो अदृश्य सा हो गया था पुन: वटवृक्ष की तरह व्यापक रूप में फैल रहा है।

1893 में गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् इला० में क्रियायोग कार्यक्रम के पश्चात कुछ साधकों के साथ प्लैनेटोरियम देखने गए। वहाँ उनके मन में प्रबल इच्छा प्रकट हुई कि क्रियायोग ध्यान का एक बड़ा हाल बनवाना चाहिए जो प्लैनेटोरियम के आकार में हो और जिसमें कम से कम १० हजार लोग बैठ कर ध्यान कर सकें। ईश्वर नें गुरूदेव की इच्छा की पूर्ति के लिए डॉ० एम बिदेसी को चुना। जिस वर्ष गुरूजी के मन में प्लैनेटोरियम जैसा ध्यान केन्द्र बनवाने की इच्छा प्रकट हुई थी ठीक उसी वर्ष डा० एम बिदेसी नें अदृश्य प्रेरणा के परिणामस्वरूप किचनर, कनॉडा में 'योग फैलोशिप टेम्पल' की स्थापना किया। इस टेम्पल में स्थित ध्यान केन्द्र प्लैनेटोरियम की तरह ठीक उसी प्रकार बना हुआ है जिस प्रकार का गुरूदेव के मन में ध्यान केन्द्र बनवाने की इच्छा प्रकट हुई थी। गुरूदेव का मानना है कि क्रियायोग अनुसंधान संस्थान, भारत (योग सत्संग समिति) तथा योग फैलोशिप टेम्पल, किचनर, कनॉडा इन दोनों केन्द्रों के द्वारा क्रियायोग बड़े ही व्यापक रूप में फैलेगा और मानवता की सच्ची सेवा होगी।

अधोलिखित विचार डॉ० जीना बिदेशी ने 1 फरवरी, 2002 को क्रियायोग अनुसंधान संस्थान के माघमेला शिविर में व्यक्त किया। डॉ० जीना बिदेसी श्री तारामाता, योग फैलोशिप टेम्पल, ऑन्टेरियो, कनॉडा की चेयरपर्सन हैं जिन्होने अपने इस विचार को पहले अंग्रेजी में लिखा और फिर इसका हिन्दी अनुवाद करवाकर स्वयं पढ़कर सुनाया। प्रस्तुत है इसका कुछ अंश-

"करीब तीस साल पहले मेरे पिता जी डा० एम० बिदेसी, एक ऐसी जगह की खोज में थे जहाँ पर सब धर्मों के लोग एक साथ शामिल हो जायें।

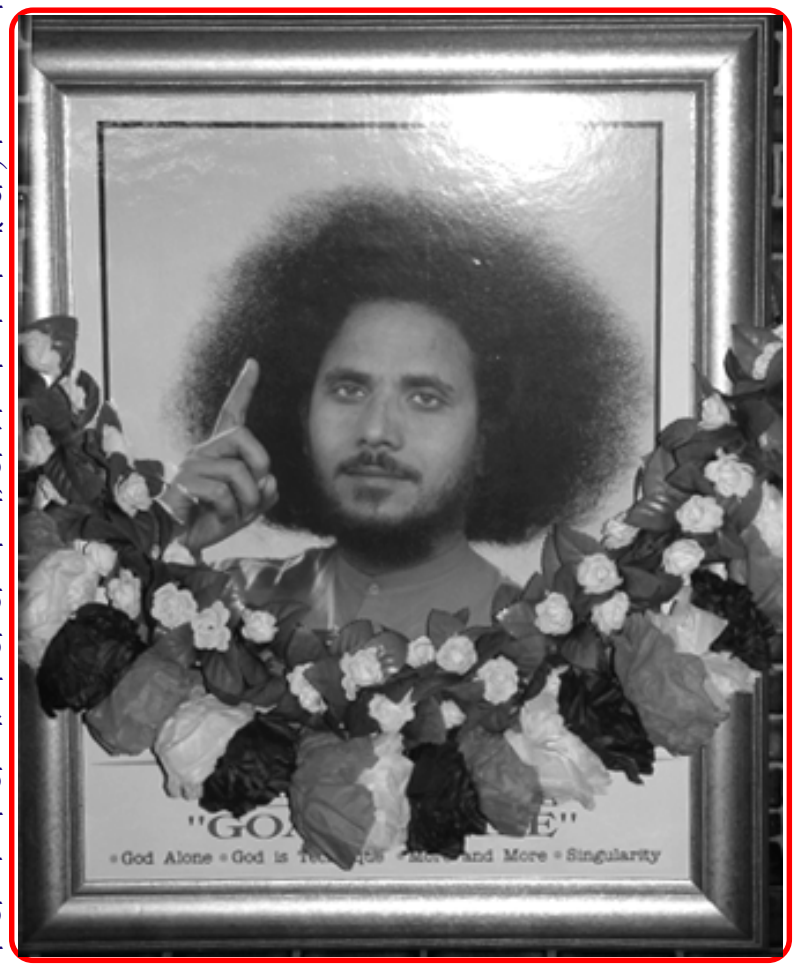

इसी बीच उन्होने इसकी खोज में हर धर्मों की पुस्तकों को पढ़ा। उन्होने देखा कि सभी धर्म एक ही विज्ञान की बात करते हैं। इसी बीच उन्होने क्रियायोग विज्ञान के बारे में भी पता किया जो कि बहुत पुराना विज्ञान होते हुए भी नया लगा। क्रियायोग सारे जगत का ही विज्ञान है। इस विज्ञान से वे इतना प्रभावित हुए कि इसी बीच उन्होने यह विचार कर लिया कि वे क्रियायोग का एक मंदिर बनवायेंगे।

उन्होने 1893 में इस मंदिर की स्थापना की जो कि 'योग फैलोशिप टेम्पल' के नाम से जाना जाता है। इसी बीच कई स्वामी लोग यहाँ इस मंदिर को देखने आये और बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने मेरे पिता जी से कहा कि वे इसको चलाना चाहते हैं और वे अपनी तरह से चलाएँगे। वे लोग इस विज्ञान से परिचित नहीं थे इसलिए मेरे पिता जी ने उन सबको मना कर दिया। हालांकि हमको एक स्वामी की बहुत जरूरत थी। उन्होने किसी को भी इतना उँचाई पर पहुँचा हुआ नहीं देखा जो कि परमात्मा की तरफ शीघ्र और सच्चा रास्ता दिखा सके।

सन् 1995 में भगवान की कृपा से हमें स्वामी श्री योगी सत्यम् जी का दर्शन हुआ और वे क्रियायोग सिखाने के लिए मंदिर में आए। हमें तुरन्त पता चल गया कि गुरूजी उसी लाइन में हैं जिसमें श्री महावतार बाबाजी, श्री लाहिड़ी महाशय, श्री युक्तेश्वर गिरी व श्री परमहंस योगानन्द जी थे। हमें पता चला कि सन् 1983 में जब हमारा मंदिर बना था उसी साल भारत में अपना मिशन शुरू किया था।

2000 में हमने निश्चय किया कि यदि हम संसार को क्रियायोग के माध्यम् से मिलाना चाहते हैं तो पूरब और पश्चिम के दोनों सेन्टर (योग सत्संग समिति/ क्रियायोग अनुसंधान संस्थान, इलाहाबाद, उ०प्र० भारत और योग फैलोशिप टेम्पल- किचनर, कनॉडा) को मिलाना होगा।

भगवान ने गुरूजी को मावन की सेवा के लिए भेजा है। गुरूजी एक चमकती रोशनी हैं जो हमें माया के अंधेरे से भगवान का रास्ता दिखा रहे हैं। भारत के लोगों के लिए यह अच्छा मौका है कि वे पश्चिमी देशों के लोगों के साथ जुटकर दुनियाभर में क्रियायोग विज्ञान को फैलाने के वृहद लक्ष्य में गुरूदेव के साथ लगें जिससे यह क्रियायोग विज्ञान पूरे विश्व में फैले। क्रियायोग के द्वारा सब प्राणी धर्म के विवाद के बिना शान्ति पूर्वक एक साथ रह सकते है और इस प्रकार एक दिन ऐसा आएगा जब संसार के प्राणी एक साथ मिलकर भगवान में विलीन हो जाएँगे।

योग फैलोशिप टेम्पल, किचनर, कनॉडा में क्रियायोग साधकों के साथ गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्